

VAAGDHARA

सितम्बर, 2021

वाग्धारा नी

पोषण संवेदी खेती

भारत में 73 प्रतिशत जनसँख्या ग्रामीण क्षेत्र में रहती है प् यहाँ के कृषि आजीविका में 50 प्रतिशत परिवारों के पास 1 हैक्टेयर से कम जमीन हैं और अन्य 20 प्रतिशत परिवारों से कमए इस प्रकार 70 प्रतिशत परिवार छोटे किसान की श्रेणी में आते है। पीढ़ी दर पीढ़ी जमीन का बटवारे में काफी बढ़ोतरी हो रही है यहाँ पर प्रमुख प्रश्न यह है की खेती में कौन से तरीके अपनाये जाे छोटे किसान परिवार के लिये पोषण एवं टिकाऊ आजीविका अपना सके प इसके लिए पोषण संवेदी खेती को ध्यान में रखते हुये इन सभी परिवारों को उन घटकों के ऊपर कार्य करना सुनिश्चित करना होगा पोषण संवेदी खेती व्यवस्था मे पशुपालन, मछलीपालन, खेती व कृषि उद्योग इत्यादि एक दूसरे के सहयोगी के रुप में जुड़े रहते हैं। एक प्रक्रिया का उत्पाद या अपशिष्ट या कचरा उसी रुप मे या सुधार करके दूसरे घटक जैसे पशुपालन/मछलीपालन के लिये आदान बन जाता है व खाद, चारा, उर्वरकता उत्पादित करता है। इस तरह से दूसरे तन्त्र की अपनी उत्पादकता निपुणता पूर्ण व किफायती हो जाती है।

दक्षिण राजस्थान में कृषि उत्पादन की बहुत सी स्थितियाँ ऐसी है जिनको पोषण संवेदी खेती प्रणाली अपनाकर दूर किया जा सकता है। यहाँ की निम्न स्थितियाँ पोषण संवेदी खेती प्रणाली अपनाने के लिये उपयुक्त है।

- यहाँ का किसान परिवार गरीबी रेखा के नीचे गुजर-बसर कर रहा है, और परिवार के लिये भोजन व पोषण के लिये जुझ रहा है।
- किसान की जमीन ढलाऊ है व ऊपरी मृदा का क्षरण तेजी से हो रहा है।
- रसायनिक खाद महंगा है एवं आसानी से उपलब्ध नहीं है, गरीब किसान की क्षमता से बाहर है और उसके लिये खर्चीला है।
- रसायनिक खाद के प्रयोग से मृदा मे लवण मात्रा अधिक हो गई है व उर्वरक क्षमता कम हो रही है अतः किसान अपने खेत मे मिट्टी की गुणवत्ता को सुधारना चाहता है।
- किसान रसायनिक विधियों (खाद व कीटनाषक) का प्रयोग कम करना चाहता है।
- किसान जैविक व प्राकृतिक खेती का प्रयोग करने का इच्छुक है।
- किसान अपने संसाधनो के किफायती उपयोग व उत्पादन स्थायित्व के लिये प्रयासरत है।
- बरसात के पानी को पर्याप्त मात्रा मे संग्रहित किया जा रहा है।

पोषण संवेदी खेती में समुदाय स्तर पर जिम्मेदारी :-

1 भूमि एवं जल प्रबन्धन :- ढालू जमीन पर ट्रेंच का कार्य इस कार्य के अन्तर्गत हैजरो पर नाईट्रोजन स्थिरीकरण वृक्षारोपण, बीच के स्थान पर खेती या घास उत्पादन करना जिससे मिट्टी एवं खाद का बहाव में कमी आयेगी एवं मिट्टी की उर्वरकता मे बढ़ोतरी होगी इस पद्धती मे नाईट्रोजन स्थिरीकरण झाड़ियो व वृक्षों जैसे सुबबुल, ग्लेरीसिडिया, सहजन, खाँखरा इत्यादि की दो ख़ाओं जो एक दूसरे से चार से छः मीटर की दूरी पर हो, के बीच स्थाई व मौसमी फसलों की खेती की जाती है। नाईट्रोजन स्थिरीकरण झाड़ियो व वृक्षों को बहुत सघन दो रेखाओं में इतना पास पास लगाते हैं कि वे मृदाक्षरण की रुकावट के रुप मे काम करने लगते हैं जब पेड 5 से 7 फीट की ऊँचाई पर पहुँचता है पुनः 2 फीट तक उनकी छंगाई कर दी जाती है। छंगाई की गई डालियों को दोनों रेखाओं के बीच के खेत मे हरी खाद के रुप मे उपयोग लेते हैं।

बहुउद्देशीय पौधे :- ढलाऊ भूमि कृषि तकनीकी एक विविधिकृत कृषि पद्धती है जिसमे नाईट्रोजन स्थिरीकरण झाड़ियो व वृक्षों के अतिरिक्त अन्य बहुवर्षीय फसलों को भी लगाया जा सकता है। ऐली क्षेत्र की फसल को भी बदला जाता है, मक्की के बाद सोयाबीन, मूंग, उडद, चवला और तिल इस तरह से फसल चक्र को विकसित किया जाता है। अधिक ढलान वाली भूमि मे चारे की उन्नत किस्म को भी लिया जा सकता है। नाईट्रोजन स्थिरीकरण के लिये चारे के बहुवर्षीय झाड़ियो को प्रयोग मे लेने से साल भर चारे को सुनिश्चित किया जा सकता है व तना बढ़ा होने पर जलावन के रुप मे भी प्रयोग मे लिया जा सकता है। बहुउद्देशीय पौधे पशु के लिए भी काफी पोषक के रूप में कार्य करते है सुबबूल, एसेजनाए, गिलरिसिडीया जैसे पौधे जमीन में नाइट्रोजन के रूप में कार्य करते है इसके साथ साथ पशुओं को भी उसकी हरी पतियाँ खिलने से काफी न्यूट्रीशन मिलता है इसके साथ जो फलदार पौधे चुलुत होने की कगार पर है जैसे जामुन, टिमरू एवं सीताफल जैसे फलो से बच्चो को काफी पोषण मिलताा है इस तरह के पौधे लगवाना काफी जरुरी है ।

पशुपालन :- पोषण संवेदी खेती में पशुपालन कार्यों मे बकरीपालन, दुधार पशुपालन व मुर्गीपालन प्रमुख घटक है, पशु का चयन परिवार के उपभोग, बाजार की माँग, फसल, मौसम, बरसात की मात्रा व तरीका, बीमारियों के प्रकोप व रहन सहन के आधार पर किया जाता है। खेती के साथ पशुपालन के कार्य को पूरक गतिविधि के रुप में सम्मिलित करना सर्वश्रेष्ठ चयन है। खेती-पशुपालन के इस स्वाभाविक चक्र में जैविक-पाचक का उपयोग अपशिष्ट पदार्थ के उचित उपयोग के साथ-साथ रसीई व उजाले के लिये गैस भी प्रदान कर सकता है। इस खेती मे मुर्गीपालन, दुधार पशुपालन, भेड़ व बकरीपालन, मछलीपालन, चारा उत्पादन, इसमे पशुपालन घटक प्राथमिक उत्पादक या अलग-थलग न होकर एक पूरक व्यवस्था का हिस्सा होता है, जिसमे फसल के चयन मे बदलाव आता है व थोड़ा हिस्सा अनाज व चारा दोनो देने वाली फसल ली जाती है,

बकरी पालन से परिवार को उसके दूध से एवं मुर्गी पालन से उसके अंडे से पोषण तो मिलता ही है लेकिन इसके पालन करने से उनकी आमदनी में भी वृद्धि होती है इस बकरी पालन एवं मुर्गी पालन में ज्यादा खर्च भी नहीं आता है जो भी आपके पास उपलब्ध संसाधन है उससे उनका जीवनयापन चल जाता है इसलिए सीमान्त किसान को इसका पालन करना जरुरी है

बीज संग्रहण :- बीज संग्रहण का मुख्य लक्ष्य अगले वर्ष की फसल बोने के लिये अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों को चुनकर सुरक्षित रखना होता है। ताकि बाजार से बीज न ख़ोदने पड़े और समय पर बुआई की जा सके।

बीजों का चयन :- लोग सामान्यतः बीजों का चयन अगले मौसम में बोने के लिये करते हैं। अगले मौसम में बीजों को इस्तेमाल करने के लिये फसल से अच्छे स्वस्थ बीजों को निकाल लिया जाता है। पारम्परिक तरीके से पहले बीजों को मटके में डालकर इनमें नीम की पतियाँ, राख आदि मिलाकर रख दिया जाता है, क्योंकि बीजों को मुख्य रूप से कीड़ों से खतरा होता है।

बीजों का चयन मुख्यतः : तब करते हैं जब फसल पककर तैयार हो जाती है, अर्थात बीजों का चयन अक्टूबर के अन्त में या नवम्बर के प्रारम्भ में दीपवली के त्यौहार के आस-पास फसल की कटाई के दौरान करते हैं। बीजों का चयन मुख्यतः बुजुर्ग व समझदार किसानों की मदद से करते हैं।

बीजों का चयन मुख्यतः वहीं पर किया जाता है जहाँ पर फसल की कटाई की जाती है। आमतौर पर फसल से अच्छे बीजों को चुनकर अलग रख दिया जाता है। मक्का यहाँ की मुख्य फसल है। मक्का के बीजों का चयन करने के लिये निम्नलिखित तरीकों का इस्तेमाल करते हैं।

- बीजों का चयन तब करते हैं जब फसल खेत में पूरी तरह पककर खड़ी हो जाती है। भरावदार भुट्टे को अलग करके बीज के रूप में सुरक्षित रखते है।
- मुख्यतः मोटे तथा लम्बे भुट्टे बीज ही चुने जाते हैं।
- अच्छे बीजों का चयन करने के लिये अच्छे पौधों का चयन किसान लोग खुद ही करते हैं। किसान देखते हैं कि कौन सा पौधा हट्ट-पुट्ट बीमारी रहित है।

किसानों का अपना बीज होना इसलिए जरूरी है की

भोजन में विविधता :- कृषि में मुख्य अनाजों की एक ही फसल पैदा करने के स्थान पर खाद्य उत्पादन विविधता लाकर ऐसी प्रणाली की ओर बढ़े जो छोटे आकार के मोटे अनाज, दालों, फलों और सब्जियाँ सहित खाद्य पदार्थों को एकीकृत करे। दलहन की खेती से न केवल पोषण प्रचुर खाद्य उत्पादन को बढ़ाने में सहायता मिलेगी अपितु मिट्टी के पोषक तत्वों को बनाए रखने में भी सहायता मिलती है। मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, रागी और छोटे स्तर के मोटे अनाज जैसे कुटकी, कोदो, सावा, कांगनी और चीना को पोषक प्रचुर खाद्य पदार्थ के तौर पर माना जाता है। चूँकि मोटे अनाज की खेती के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है, इसलिए फसल पुनर्चक्रण के भाग के तौर पर उनकी खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

आदिवासी समुदाय में खास करके भिन्डी, तुरई, कद्दू, लोकी, लहसुन, प्याज, वालोर, मिर्च, बेगन, टमाटर, मुली,गाजर जैसी सब्जी दिखाई देती है इसके अलावा ही पोषण वाली खेती में भोजन में विविधता बनाये रखना

बहुत ही जरुरी है आपके खेत में हर प्रकार की खरीफ एवं रबी में बिना बीज डाले जो अपने आप जो पौध उग जाती है इसमें काफी पोषण वाली सब्जी होती है उसकी पहचान करना बहुत जरुरी है जैसे खरीफ में ढीमडी, बोकना, वैसे ही रबी की सीजन में बथुआ, रजन, ढीमडी देखने को मिलता है और यह अपने आप खेत में दिखाई देता है तो इन पत्तेदार सब्जी में काफी पोषण रहता है । यह सभी प्रकार की सब्जी जब सीजन में ज्यादा मात्रा में हो तो उसकी सुखमनी करके भी उसका प्रयोग कर सकते है ।

संगठन के माध्यम से क्या कर सकते है :- पोषण संवेदी खेती में संगठन की निम्न प्रकार अहम् भूमिका रहती है।

बीज प्रबंधन एवं बीजो उपचार :- किसान खास करके बीज पर निर्भर रहता है और बुआई के लिए बीज हमेशा स्वस्थ एवं साफ़ होना जरुरी है आने वाली सीजन में कौन सा बीज कितनी मात्रा में चाहिये उसका



यदि अपने फला स्तरीय चर्चा करके जानकारी प्राप्त की जाय तो एक दुसरे को मदद मिल सकती है साथ में जब भी फसल निकल ने का समय आता है उस दौरान संगठन सभी से बीज उपलब्ध कर लेता है तो बीज की बिल्कुल समस्या नहीं रहेगी सभी को जरूरत के हिसाब से बीज उपलब्ध हो सकता है और बीज सही समय पर और सही गुणवत्ता युक्त मिल जाता है तो समुदाय को काफी उत्पादन एवं फसल से लाभ हो सकता है इसके साथ साथ जितना स्वस्थ बीज जरुरी है उतना ही बुवाई के वक्त उसका उपचार करना जरुरी है उपचार की विधि आप अपने स्वराज मित्र से भी जानकारी लेकर बीज को उपचार करके ही बुआई करनी चाहिये, इस तरह संगठन सभी परिवारों के साथ इस तरह का कार्य करन चाहिये ।

बायो पेस्टीसाइड :- जैसा की आप सभी जानते है की आज कल जो केमिकल पेस्टिसाईड एवं फर्टिलाइजर से पोषण तो बहुत दूर की बात है लेकिन बीमारी का प्रमाण बढ़ जाता है इस को आपने अपने खेती मे बायो पेस्टीसाइड एवं जैविक खाद का प्रयोग करने से खाद पदार्थ में पोष्टीकता बनी रहती है, संगठन के सभी साथी मिलकर बायो पेस्टीसाइड दवाई बनाकर उपयोग कर सकते है, इसमें खास तौर पर अपने आसपास के वनस्पति से दवाई बनती है और संगठन में बनाने से कम समय में जल्दी बन जाती है और सभी को आवश्यकता के आधार पर ले जाकर उसका उपयोग कर सकते है साथमे जैविक खाद में विशेष कर जीवामृत संगठन बनाकर उसका उपयोग कर सकते है।

भूमि सुधार कार्य :- आप सभी जानते है की ढालू जमीन के अंदर बारिश के समय में मिट्टी एवं खाद पानी के साथ बहकर चला जाता है यदि उसको नहीं रोका गया तो उत्पादन में कमी तो होगी साथ ही फसल में पोषण तत्व होने चाहिये वो नहीं मिलता । इसके लिए सभी संगठन वाले मिलकर एक हलमा के रुप मे अपने खेत को ट्रेंच के माध्यम से सुधार सकते है साथ मे बहती हुई मिट्टी को रोककर अपनी फसल एवं उत्पादन में वृद्धि कर सकते है **पंचायत स्तर पर क्या कर सकते है :-** पोषण संवेदी खेती में पंचायत स्तर पर खास करके निम्न कार्य कर सकते है 1. नरेंगा कार्य की योजना के अन्तर्गत जो भी योजना शामिल है जैसे भूमि समतलीकरण, वर्मीकम्पोस्ट, पौधारोपण, जैसी योजना को पंचायत में लागु करके सभी परिवारों को लाभान्वित करवाना चाहिए।

2. कृषि विभाग एवं फलोद्यान विभाग की योजना के अन्तर्गत में विशेष करके सि्रिकलर सिस्टम, फलदार पौधा, उन्नत बीज, जैविक खेती जैसी योजना लागु करवाकर अपने गाँव में पोषण बढ़ा सकते है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि संतुलित भोजन प्राप्त करने के लिये परिवार को अपनी आर्थिक स्थिति के आधार पर विभिन्न समयों में भिन्न-भिन्न पोषक तत्वों से युक्त खाद्य पदार्थों का चयन करना चाहिए जिससे वे अपनी खाद्य आदतों तथा संतुलित भोजन में सामंजस्य बैठा सकें। अनेक खाद्य पदार्थ जो शरीर के लिये कम कीमत पर आवश्यक पोषक तत्वों को उपलब्ध कर सकते हैं, क्षेत्रीय उत्पादन द्वारा ही समायोजित किए जा सकते हैं परंतु अज्ञानतावश अथवा उच्च जीवन स्तर के खोखले प्रदर्शन के कारण हम उनका सेवन करने से वंचित रह जाते हैं। प्रयास यह किया जाना चाहिये शारीरिक रोगों से मुक्त रह सकें।

भणिया गणिया ने हउए पुरे

वगर भणिया ने दुनिया लुटे



मेरे प्रिय किसान भाइयो, बहनों, प्यारे बच्चो , संगठन के साथियों , स्वराज मित्रो जय गुरु !

बरसात की समस्या से हम सभी गुजर रहे है, असमान बरसात और अपर्याप्त बरसात ने हम सभी को चिंता में डाल दिया है कुछ स्थानों पर बारिश हुई भी है तो उसने नुकसान दिया है ऐसा सुनने में आया है । विगत समय से हम समय-समय पर अलग-अलग विषयों पर चर्चा करते आये है कभी हमारी संस्कृति की सुरक्षा तो कभी हमारी पोषण की सुरक्षा , कभी बीज की सुरक्षा तो कभी पानी की रक्षा, और तो और एक जनजातीय समुदाय किस प्रकार से स्वराज की भूमिका निभाता है इस पर भी हमारी चर्चा होती रही है परन्तु यह माह हमारे लिए अलग किस्म का रहा ।

आप सभी को विदित है बांसवाडा जिले में 750 गाँव में हमारा पोषण स्वराज अभियान हुआ । जिसमे करीब 70 हजार बच्चो की जाँच की गई और जिसमे 20 प्रतिशत से अधिक कुपोषित बच्चे मिले । नियमित कुपोषण, अति कुपोषण या किसी समय का कुपोषण इन सभी के बारे में हम कभी भी बहुत गहराई से अध्ययन में नहीं लाते है शायद वो भी एक कारण होता है जिससे हमारे यहाँ पोषण को गंभीर नहीं मानते है और हमारे साथी या हमारे तौर तरीकों ने उसे चिंता का विषय माना ही नहीं है और इसका परिणाम यह हुआ है कि हमारे यहाँ की औसत आयु कम होती है, हमारे यहाँ पर लोगो में शारीरिक,मानसिक तौर पर कमजोरी ज्यादा होती है । 40 वर्ष का आदमी 60 वर्ष का दिखने लग जाता है और 30 साल की बहन 50 साल की लगने लग जाती है,वृद्धावस्था जल्दी आती है और हम काम कर पाने में सक्षम नहीं होते है और मानसिक अक्षमता को देखे तो वो अलग होती है जिससे हम दुनिया की इस दौड़ में ,पढ़ाई में हमारे बच्चे पिछड़ जाते है इसका कहीं न कहीं एक कारण कुपोषण भी हो सकता है क्योंकि जो 20 प्रतिशत बच्चे कुपोषित निकल कर आये है वो तो अलग है इसके अलावा भी कुपोषित नहीं होते हुवे भी जो बच्चे कुपोषित के करीब है उनकी संख्या भी ज्यादा है तो हम 20 प्रतिशत के आंकड़े को देखकर प्रसन्न नहीं हो सकते की हमारे यहाँ कुपोषित बच्चो की संख्या कम है और इसी को लेकर से हमारा पोषण स्वराज अभियान आयोजित हुआ था । जब चर्चा यह बात की सामने आई की हमारे स्थानीय पोषण सामग्री से बनाया हुआ खाद्यान बच्चो तक पहुँचा जिससे बच्चो के वजन में इजाफा हुआ तो इसका एक मूल उद्देश्य भी यही था कि हमें देखना था की किस तरह स्थानीय सामान व स्थानीय खाद्य पदार्थों से बच्चो का वजन बढ़ता है या नही बढ़ता है, और सिद्ध हुआ की वजन बढ़ता है इसका मतलब यह है की या हम खाने में गैर जिम्मेदारी निभाते है या हमारी दूसरी जिम्मेदारियाँ इतनी है की हम बच्चो को देख नहीं पाते है तो हम सब की यह जिम्मेदारी है की हम बच्चो के पोषण का ध्यान रखे क्योंकि हमारी अलग पीढ़ी है हमारी संतति है जो हमे सुरक्षित रखेगी ।

इसके साथ दूसरा चर्चा का विषय यह था की उन परिवारों में कुपोषण कम देखने को मिला जहाँ पर खेती में एक से ज्यादा प्रकार की फसले थी, घरों में विविध फलदार पेड़ थे, वो सब्जियाँ अपने घर पर उगाते थे इसका मतलब यह होता है की हमारी खेती भी हमारे पोषण को प्रभावित करती है और उसके लिए जरुरी है हम हमारी खेती को परंपरागत तरीके से विविधता के साथ करे । जो हम कहते थे और माना जाता था की हमारे क्षेत्र में व्यर्थ कुछ नहीं होता । यहाँ पर मैं यह आग्रह करना चाहूँगा की हमारी सब्जियाँ और भाँजिया जो बाजार से लाने पर विश्वास करते है उनको कैसे कम किया जाये क्योंकि हो सकता है किसी कारण से हम रोज नही ला पाते हो और हम महीने में दो बार लाये जिसकी वजह से उनको हम नियमित नहीं खा पाए और अगर हम स्थानीय सब्जियों और भाजी पर ध्यान देंगे तो उसे नियमित खा पाएंगे जिससे हमारे बच्चो को पोषण मिलेगा।

इसके लिए मेरा समस्त स्वराज मित्रो से , संगठन के पदाधिकारियों से, सहजकर्ताओ से, हमारे सक्षम समूह की बहनों से आग्रह है की जिस प्रकार आपने पोषण स्वराज अभियान में भागीदारी निभाई थी उसी प्रकार से नियमित तौर पर भागीदारी निभाकर के हर परिवार में पोषण वाटिका, पोषण संवेदी खेती और उनके बच्चो का नियमित पोषण पर अध्ययन करते रहे और जागरूक करते रहे । इसी के साथ एक महत्वपूर्ण विषय है की हमें हमारे अभियान के दौरान देखने को मिला की आंगनवाडी केन्द्रों पर संगठन के सदस्यों ने आंगनवाडी केन्द्रों को सशक्त बनाने का कार्य किया और यह निकल कर आया की एक बहुत बड़ी संख्या में आंगनवाडी केंद्र के भवन जर्जर हो रहे है अगर ऐसी स्थिति थी तो हमारे स्वराज संगठन को प्रसास करने की जरुरत नही थी? क्यों उसके लिए हमें किसी पोषण स्वराज अभियान की आवश्यकता हुई । क्या हम लोग पहले इसके लिए प्रयास नही कर सकते थे? इसका मतलब यह है की हम उसे जरुरी नही मानते और उस पर हमारा ध्यान नही होता । उसमें हमारी संस्था जो हमारे बच्चो के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होती है जैसे कि आंगनवाडी केंद्र , स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र वहाँ पर जाना उनसे मिलना वो हमारे लोकतंत्र की महत्वपूर्ण भागीदारी होती है और तो और पंचायत के अन्दर इसे मुद्दो को उठाना चाहिए ।

मैं आप सभी से आग्रह करना चाहूँगा की 2 अक्टूबर को ग्राम सभा है हमारी ग्राम सभा तभी सफल होगी जब हम 2 अक्टूबर को ग्राम सभा में जायेंगे और नरेंगा में हमारे स्वयं के कामो को जुड़वायेंगे साथ ही हमारा पोषण स्वराज अभियान तभी सफल होगा जब हमारे जर्जर हो रहे आंगनवाडी केंद्र , स्कूल उसके लिए बात को रखेंगे । आप लोगो के सहयोग से आप लोगो के प्रयासों से आप ने अपने पोषण स्वराज अभियान को सफल बनाया है चूँकि यह सतत होने वाला अभियान है आप ये माने की 15 दिन के अभियान से कुपोषण दूर हो सकता है या दो दिन हमें राहत मिल सकती है तो ऐसा नहीं है, ये निरंतर होने वाला प्रयास है और ये तभी सम्भव है जब हम उसे नियमित रूप से जुड़ करके रहेंगे जिससे हमारे समाज को और आने वाली पीढ़ी को कुपोषण मुक्त बना पाएँगे ।

धन्यवाद

जय गुरु !

आपका अपना
जयेश जोशी

(विश्व साक्षरता दिवस 8

सितंबर)

विश्व में शिक्षा के महत्व के दर्शाने और निरक्षरता को समाप्त करने के उद्देश्य से 17 नवंबर 1965 को यह निर्णय लिया गया, कि प्रत्येक वर्ष 8 सितंबर को विश्व साक्षरता दिवस के रूप मे मनाया जाएगा। इसलिए सन् 1966 में पहला विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया था। तभी से लेकर आज तक पूरे विश्व में 8 सितंबर को विश्व साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज के दिन सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए उसका सम्मान किया जाता है। यह दिन हमारे समाज में जागरूकता फैलाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह दिवस विश्वभर में साक्षरता के लिए संदेश देता है। इसका उद्देश्य लोगों तक ज्ञान पहुंचाना है क्योंकि निरक्षता अँधेरे के सामान है और साक्षरता प्रकाश के सामान अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए

लोगों का साक्षरता होना बेहद जरूरी है क्योंकि एक अनपढ़ आदमी खुद का भला नहीं सोच सकता तो भला वो राष्ट्र के विकास में क्या योगदान देगा। हमारे देश में शिक्षा को लेकर समय -समय पर कई अभियान चलाए जा रहे हैं जैसे सर्व शिक्षा अभियान , प्रौढ़ शिक्षा अभियान , मिड डे मील योजना और राजीव गांधी साक्षरता मिशन चलाए जा रहे हैं दिन ब दिन शिक्षा के लिए कड़े प्रयास किये जा रहे हैं। आज कल गाँव की लड़कियाँ भी बड़े बड़े शहरों में पढ़ने जाने लगी हैं। क्योंकि एक शिक्षित महिला पूरे परिवार को शिक्षित बना सकती है। शिक्षा के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वास से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

हम सब जानते है कि एक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा क्या महत्व है। साक्षरता एक ऐसी कुंजी है, जो लोगों को सम्मान के साथ जीने में मदद करती है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है निरक्षर जीवन जीना वर्तमान समय में सबसे

बड़ा अभिशाप है। यदि हम देश को सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षिक रूप से समृद्ध करना चाहते है तो इसकी पहली सीढ़ी शिक्षा है। एक साक्षर समाज प्रत्येक राष्ट्र की रीढ़ है। साक्षर समाज किसी भी देश के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका याद करता है। आज प्रत्येक क्षेत्र में जिस तेजी से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। उसमें शिक्षा परम आवश्यक हो गई है। मानव विकास और समाज के लिये उनके अधिकारों को जानने के लिए मानव का साक्षर होना जरूरी है। जीवन जीने के लिए जिस प्रकार भोजन आवश्यक है उसी प्रकार जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए साक्षरता भी महत्वपूर्ण है। आज समाज और राष्ट्र में गरीबी को मिटाने, बाल मृत्यु दर को कम करने, जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए साक्षरता बहुत जरूरी है।

हमें समाज में शिक्षा को प्राप्त करने की ओर लोगों को बढ़ावा देने के लिये और परिवार,

समाज तथा देश के लिये अपनी जिम्मेदारी को समझना पड़ेगा। इसके लिए एक सबल और साक्षर समाज के निर्माण के लिए आइए इस बार शुरुआत बताने या समझाने से नहीं, समझने से करते हैं। एक ईश शुरुआत करते हैं। साक्षरता दिवस पर एक प्रण करते हैं, उस यज्ञ में आहुति देने का, जो शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए बरसों से किया जा रहा है, लेकिन उसकी ज्वाला उतनी तीव्रता से धधक नहीं पा रही।जरूरी नहीं है, कि इसके लिए हमें कोई बड़े काम से शुरुआत करनी हो। आहुतियाँ छोटी ही होती है, लेकिन यज्ञ का महत्व और उद्देश्य बढ़ा होता है। ठीक वैसे ही हमारी छोटी-छोटी कोशिशें भी कई बार बड़ा आकार लेने में सक्षम होती हैं। आओ हम उन छोटी छोटी कोशिशों से एक सार्थक और विनम्र पहल करें...

यदि हम घर पर किसी गरीब बच्चे को न पढ़ा पाएं, तो अपने क्षेत्र के लोगों के साथ मिलकर कोई छोटा सा समूह बनाकर, उसके स्कूल जाने की व्यवस्था जरूर कर सकते हैं।

हम कुछ वक्त निकालकर, उन पिछड़े क्षेत्रों व लोगों के बीच शिक्षा के महत्व को साझा कर सकते हैं, जहां शिक्षा से जरूरी मजदूरी और ज्ञान से जरूरी भोजन होता है। हम ज्ञान के प्रकाश से वंचित तबके को इस बात एहसास करा सकते हैं, कि शिक्षा प्राप्त करने की कोई उम्र नहीं होती।

हम कम से कम सरकार की शिक्षा संबंधी योजनाओं की जानकारी तो बांट सकते हैं, हमारे ये छोटे छोटे प्रयास लोगों के अंधकारमय जीवन में एक नया दीपक जला सकते है, क्योंकि शिक्षा रोजगार या पैसे से ज्यादा खुद के विकास के लिए जरूरी है।

यदि हम केवल सिद्धांत रूप से ही नहीं वरन व्यावहारिक रूप से भी समाज के लिए कुछ कर पाते है तो सही मायने में विश्व साक्षरता दिवस पर शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने और लोगों का ध्यान शिक्षा की तरफ आकर्षित करने के साथ ही उन्हें सही शिक्षा के संस्कार देने में सफल होंगे ।

आज हमें इसी संकल्प शक्ति कि आवश्यकता है कि...

आओ हम सब मिलकर गाये मिलकर गाये पढ़ लिखकर खुशहाल बने और देश बनाए पढ़ा लिखा बालक बनता है सबका प्यारा शिक्षा का दीपक करता जाग में उजियारा फिर अनपढ़ रहकर क्यों जीवन व्यर्थ गँवाए पढ़ लिखकर खुशहाल बने और देश बनाए शिक्षा से बढ़ता जीवन मिलती है रोटी शिक्षा से मानव सेवा मानव से होती दीन दुःखी भूलों को शिक्षित रह बताए पढ़ लिखकर खुशहाल बने और देश बनाए कोई अनपढ़ अब न रहे संकल्प हमारा शिक्षित फूलों से महके उपवन ये सारा महके धरती अम्बर हम खुशबू बन जाए पढ़ लिखकर खुशहाल बने और देश बनाए आओ हम सब मिलकर गाये मिलकर गाये पढ़ लिखकर खुशहाल बने और देश बनाए



सच्चा बचपन: जनजातीय क्षेत्र और “पोषण स्वराज अभियान”

कोविड-19 ने सम्पूर्ण मानव जीवन खासकर आदिवासी/जनजातीय क्षेत्र में लोगों को बुरी तरह से झकझोर दिया है । कोविड-19 की दूसरी लहर ने आम आदमी जैसे कि दैनिक मजदूर वर्ग, खेतीहर किसान, प्रवासी कामगारों के काम धंधे पूरी तरह से चौपट कर दिए हैं । जैसे-जैसे कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान संक्रमण का प्रभाव बढ़ते हुए पीड़ित और प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी वैसे-वैसे इन लोगों के लिए काम के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाना मुश्किल हो रहा था और साथ ही इन लोगों के लिए आय की असुरक्षा, असमानता, भेदभाव और जीवन यापन से जुड़ी चिंताओं के चलते जीवन को संभालना और बचा पाना बहुत ही चुनौतीपूर्ण हो गया था ।

जैसा कि हम जानते हैं कि किसी जगह विशेष के बच्चों की पोषण की स्थिति पूरे देश के बच्चों के पोषण की स्थिति की सूचक हो सकती है । भारत में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही चिंतनीय स्थिति दर्शाता है । ग्रामीण इलाकों में पोषण से जुड़ी समस्याएं अत्यधिक पाई जाती है । पोषण की कमी की वजह से बच्चों में शारीरिक और मानसिक विकास के साथ ही साथ बच्चों का बौद्धिक विकास भी प्रभावित होता है और बच्चों के वर्तमान के साथ भविष्य पर भी नकारात्मक प्रभाव आता है ।

पारंपरिक खाद्य पदार्थ और उनसे प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों के बारे में जागरूकता की कमी और ऐसे खाद्य पदार्थ जो कि शरीर को पोषण नहीं देते हैं, उनका सेवन जिनकी वजह से बच्चों में कुपोषण का स्तर बढ़ता है । इसी वजह से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है और बच्चों में नाटपन, बीजापन और कुपोषण की समस्या अलग-अलग तरह से हमारे सामने हमेशा बनी रहती हैं ।

जन जातीय क्षेत्र और बच्चों में कुपोषण का स्तर			
	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़
स्टर्टिंग(नाटापन)	50%	46.8%	46.3%
वेस्टिंग (दुबलापन)	30.8%	37.5%	38.2%
दुबलापन या कम वजन	50.7%	53.4%	54.6%
रक्ताल्पता (शरीर में खून की कमी)	84.6%	76%	75.8%

उपरोक्त सारणी यह बताती है कि दक्षिणी राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूंगरपुर और प्रतापगढ़ जिलों में 50%, 46.8%, 46.3% संख्या में अपेक्षाकृत छोटे कद के बच्चे पाए जाते हैं । आदिवासी/जनजातीय इलाकों के बच्चे इसकी चपेट में बहुत ज्यादा हैं । कुपोषण की गंभीरता और कोविड-19 की संभावित तीसरी लहर दोनों को साथ देखने पर वैसे तो सभी बच्चे एक बहुत बड़े जोखिम के साथ खड़े दिखाई देते हैं लेकिन खासकर वे बच्चे जो कुपोषण और अतिकुपोषण जैसी गंभीर स्थितियों से गुजर रहे हैं, अधिक जोखिम के साथ हैं ।

समाधान के स्तर की सोच के साथ:

आदिवासी/ जनजातीय इलाकों में कुपोषण और अतिकुपोषण दोनों ही तरह की स्थितियों को जड़ से समाप्त करने के लिए दोहरे स्तर पर काम किये जाने की जरूरत लगती है ।

- प्रशासन और सरकारी स्तर पर किये जाने वाले काम
- सामुदायिक स्तर के प्रयास

प्रशासन और सरकारी स्तर पर किये जाने वाले काम जिसके तहत बाँसवाड़ा जिले के 5 जन जातीय ब्लॉक “कुशलगढ़, सज्जनागढ़, आनंदपुरी, गंगडतलाई और घाटोल” के बच्चों में कुपोषण के स्तर को बेहतर करने के एक साझा प्रयास हेतु जिला प्रशासन एवं वाग्धारा संस्था के संयुक्त तत्वाधान में 15 दिवसीय “पोषण स्वराज अभियान” का शुभारंभ किया गया । 9 अगस्त 2021 विश्व आदिवासी दिवस को इस अभियान की शुरुआत की गयी जो 29 अगस्त 2021 तक चला ।

15 दिवसीय पोषण और परामर्श शिविर का आयोजन सहभागिता के साथ सीखने सिखाने के आधार पर किया गया जिसमें माताओं और बच्चों की देखभाल करने वाले घर के अन्य सदस्यों के साथ प्रत्येक दिन एक अलग बिंदु पर गतिविधि आधारित काम किये गए ताकि वे इनसे सीख सकें और बच्चों की बेहतर परवरिश का हिस्सा बना सकें जैसे कि हाथों को कैसे धोएं, पौष्टिक भोजन में क्या और कैसे पकाएं, घर में साफ सफाई का ध्यान रखना और छोटे बच्चों की नियमित शारीरिक साफ सफाई आदि । गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों की माताओं को स्वास्थ्य सुविधाओं में पुनर्वास/ कुपोषण उपचार केन्द्रों से संबंधित अतिरिक्त जानकारी भी उपलब्ध करवाई गयी। कुपोषित बच्चों की पहचान और उन्हें स्वास्थ्य सुधार हेतु रेफरल सेवा के लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं के लाभ के बारे में आंगनबाडी कार्यकर्ताओं के लिए क्षमतावर्धन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया ।

इतना ही नहीं पूरे 15 दिनों में बच्चों की माताओं के साथ प्रतिदिन बिंदु वार विस्तृत चर्चायें भी आयोजित की गयी जिन्हें विषयवार इस प्रकार देखा और समझा जा सकता है:-

- SAM(अतिकुपोषित) और MAM (कुपोषित) बच्चों के बारे में सामान्य चर्चा/बातचीत और पहचान कर पाना
- माताओं द्वारा कुपोषित बच्चों की निगरानी और व्यवहार पर नजर रखना
- संचारी रोगों की रोकथाम के लिए मां और बच्चे के टीकाकरण कार्यक्रम पर चर्चा
- IYCF कार्ड का उपयोग करके विशेष पोषण संबंधी और व्यक्तिगत परामर्श
- दैनिक जीवन में व्यक्तिगत स्वास्थ्य और स्वच्छता पर चर्चा
- समुदाय के बीच प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर पोषण और स्वास्थ्य देखभाल के तरीकों पर चर्चा
- पोषण उद्यान की अवधारणा पर समझ बनाना
- स्तनपान जल्दी छुड़ाने और दर तक स्तनपान के प्रभावों पर चर्चा
- शिशु आहार और बच्चों की देखभाल के संबंध में व्यवहार के दूसरे दौरे की बातचीत

- ऐसी गतिविधियों का भी आयोजन किया गया जिन्हें “करके सीखने” की जरूरत होती है जैसे कि:-
- नवजात शिशु देखभाल के तरीकों का अभ्यास करके देखना
- बच्चों के स्वास्थ्य के अनुरूप स्थानीय खाद्य सामग्री को शामिल कर खाना पकाना सीखना
- परिवार के लिए संतुलित आहार और खाद्य पदार्थ
- घर पर बनने वाला ओआरएस तैयार करना और घर पर बनने वाले व बाजार में तैयार मिलने वाले ओआरएस और इसकी आवश्यकता पर बातचीत करना
- कुपोषित बच्चों की पोषाहार स्थिति की नियमित ट्रैकिंग

प्रशासन और वाग्धारा के स्तर पर किये गए इस 15 दिवसीय शिविर

के आयोजन और शिविर में आयोजित गतिविधियों से एक बड़ी संख्या में बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आने की संभावना है और जिसे शिविर के अंत में देखा और मापा भी गया है । लेकिन बच्चों को कुपोषण और अति कुपोषण से बचाने के लिए सिर्फ 15 दिवसीय शिविर कर देना पर्याप्त नहीं है इससे आगे की जिम्मेदारी परिवार,समुदाय और माता-पिता की बनती है । इस बदलाव को सतत बनाये रखने की जिम्मेदारी स्वयं समुदाय और परिवार को समझते हुए निभानी होगी ।

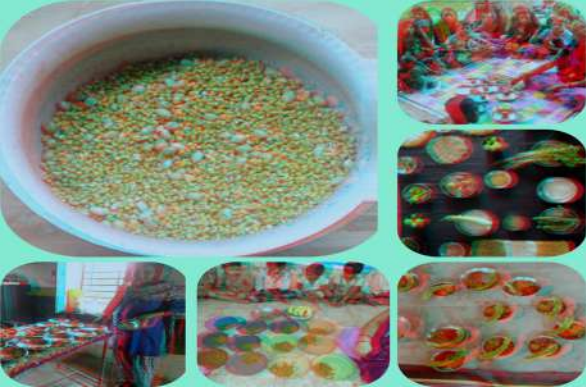
परिवार और समुदाय से यह अपेक्षा बनती है कि:-

- सर्वप्रथम यह जानना व पता करना की हमारे क्षेत्र में पोषण में कमी कब से आयी व हमारे कृषि में या खाने में विगत वर्षों में क्या परिवर्तन हुए ।
- शिविर के दौरान सीखा गया पौष्टिक आहार को पकाना और बच्चों को खिलाना, कुपोषित और अतिकुपोषित बच्चों पर विशेष ध्यान देते हुए बच्चों की परवरिश का हिस्सा बनाये जाने की जरूरत है ।
- अपने इलाके में उपलब्ध पौष्टिक खाद्य आहार जैसे:- रागी, मक्का, कांगनी, कोदरा, तिल आदि को अधिकाधिक बच्चों के खानपान का हिस्सा बनायें ।
- स्थानीय फ़ल व सब्जियां जैसे-टिमरू,सीताफल,रजन, धिमडा, झुमका,चील,अमरकंठा, कन्दगोला, चेरी टमाटर आदि को भी नियमित रूप से बच्चों के भोजन में शामिल करें ।
- बच्चों को थोड़ा-थोड़ा भोजन दिन में कई बार खिलायें और बच्चों की नियमित जाँच (वजन, लम्बाई व भुजा का माप) और टीकाकरण अपने पास के स्वास्थ्य केंद्र और आंगनवाडी केंद्र पर करवाते रहें ।
- बच्चों में स्वास्थ्य सम्बन्धित किसी भी प्रकार की समस्या के प्रति लापरवाही ना बरतें बल्कि तुरंत किसी योग्य चिकित्सक से परामर्श करें और उसके निर्देशानुसार बच्चों के स्वास्थ्य का ख्याल रखें ।
- खानपान और बेहतर देखरेख से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होगा और बेहतर स्वास्थ्य के साथ कुपोषण और अति कुपोषण वाली स्थितियों से भी बचा जा सकेगा ।

पोषण स्वराज अभियान को कैसे आगे लेकर जाएँ :-

भारत सरकार ने बच्चों, गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं में पोषण के स्तर में सुधार करने के क्रम में सितम्बर माह को “राष्ट्रीय पोषण माह” घोषित किया है, जिसके तहत सभी आंगनवाडी केन्द्रों पर पोषण को लेकर विशेष कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 1 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2021 तक रहेगा इसका फायदा समुदाय के सभी लोगों द्वारा उठाया जाना सुनिश्चित करना जरूरी है ताकि पोषण के स्तर को सुधारने के क्रम में हम एक कदम आगे बढ़ सकें जब तक एकजुट होकर इस अभियान में नहीं जुटेंगे तब तक कुपोषण के खिलाफ हमारा संघर्ष अधूरा है । इसी क्रम में आप सबके लिए एक बेहतर मौका है की जो बदलाव पोषण स्वराज अभियान से प्राप्त हुए है, उनको आगे सतत रूप से बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय पोषण माह में सभी माताएं अपनी भागीदारी निभाएं । आंगनवाडी केंद्र से प्राप्त होने वाले पोषाहार व स्थानीय खाद्य सामग्री से तरह तरह के व्यंजन तैयार कर अपने बच्चों को खिलाएं और खुद भी खाएं, साथ ही जो व्यवहारिक गतिविधियों का आयोजन किया जाए उसमे सक्रिय रूप से भाग लेंवें ।

राष्ट्रीय पोषण माह के समापन के आखिरी सप्ताह में दुबारा से अपने बच्चों के वजन, भुजा व लम्बाई का माप करें जिससे बच्चों में आ रहे नियमित शारीरिक बदलावों को देखा जा सके और बच्चों को कुपोषण से बाहर लाने की दिशा में आगे बढ़ सकें ।



बांसवाड़ा जिले मे अब बाल श्रम भिक्षावृत्ति एवं नाबालिग बालक बालिकाओं से भंगार बिनाकर खरीदने वाले नियोक्ता के खिलाफ जिला प्रशासन एवं चाइल्डलाइन ने संयुक्त अभियान चलाकर इस पर अब कार्यवाही कर शपथपत्र भरवाए गए है चाइल्ड लाइन के जिला समन्वयक परमेश पाटीदार के द्वारा बताया गया कि जिला कलेक्टर महोदय के निर्देश पर चाइल्ड लाइन जिला बाल कल्याण समिति श्रम विभाग मानव तस्करी यूनिट के द्वारा संयुक्त अभियान चलाकर जिले में हो रही बाल श्रम भिक्षावृत्ति एवं भंगार बिन कर बेचने वाले नाबालिग बालक बालिकाओं को चिन्हित करके कार्यवाही करके सुनिश्चित किया गया है की अब नहीं होगा बालश्रम, विद्यालय होगा हमारा घर /बताया गया कि चाइल्ड लाइन टीम के द्वारा जिले के समस्त भंगार खरीदने वाले नियोक्ताओं के पास जाकर उनके शपथ पत्र भरवाए गए हैं एवं उनको इस प्रकार से पाबंद किया गया है कि आप के द्वारा अपने दुकान पर किसी भी नाबालिग बालक एवं बालिका को भंगार का काम करवाने पर आपके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी साथ ही आपके द्वारा किसी भी नाबालिग बालक बालिका से किसी भी प्रकार भंगार पत्री खरीदने पर भी आपके विरुद्ध कार्यवाही अमल में लाई जाएगी जिले के 9 बड़े दुकानदारों से शपथ पत्र भरवाए गए लोगों कोअलग-अलग जगहों



भी देने लगे कि आप लोग यह काम ना करें एवं विद्यालय से जुड़कर अपना भविष्य बनाएं सरकार की अनेकों जन कल्याणकारी योजना है आप इस प्रकार अगर भंगार खरीदकर बाजार में कहीं दिखे तो चाइल्ड लाइन टीम या प्रशासन आपके परिजनों पर कार्यवाही कर जा सकती है अब टीम का यही प्रयास है कि इन समस्त बालक बालिकाओं को



किस प्रकार से विद्यालय से जोड़ा जाए।

कलेक्टर महोदय के आदेश के पश्चात टीम के द्वारा समस्त जिले में घूम-घूम कर सभी लोगों को पाबंद किया है साथ ही जागरूक किया है कि छोटे बालकों को विद्यालय भेजना है पढ़ाना है एवं किसी प्रकार की कोई समस्या होती है तो 1098 को अवगत करवाना है किसी भी प्रकार के माता

पिता अपने बालकों को घर पर रखने में असमर्थ हैं तो वह जिला बाल कल्याण समिति के माध्यम से शेल्टर करवा सकते हैं श्रम आयुक्त महोदय जी शक्तावत जी के द्वारा भी बताया गया कि सरकार की बहुत सी जनकल्याणकारी योजनाएं जिनका आपको समय-समय पर लाभ लेना है हमारे बच्चों को समय पर आना है उनका भविष्य खराब नहीं

करना है मानव तस्करी यूनिट के लाल सेन जी के द्वारा भी समस्त व्यापारियों को हिदायत देकर बताया गया कि अगर आज के पश्चात किसी भी छोटे बालक बालिकाओं से आप भंगार खरीदते हैं तो आप के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाएगा और दुकानों को बंद किया जाएगा चाइल्ड लाइन की तरफ से बसुड़ा जी कटारा ने सभी लोगों को बताया कि आपको किसी प्रकार की समस्या हो तो 1098 पर अवगत करवाए ताकि हम लोग आपके बालकों के पुनर्वास की पूरी कार्यवाही कर सके एवं आगे तक अवगत करवा सके दिलीप जी रोकड़िया के द्वारा बताया गया कि जिला बाल कल्याण समिति के माध्यम से आपके बालकों का पुनर्वास करवाया जाएगा माता-पिता और बच्चों को किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं मिल रहा है तो उसके लिए कार्यवाही की जाएगी सहायक निदेशक के द्वारा बताया कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लें एवं बच्चों को कहीं पर भी भंगार बिनने के लिए ना भेजें बच्चों को पढ़ाएं अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें एवं पूरी टीम के द्वारा निश्चित किया गया कि माह में 1 दिन समस्त टीम जिले के समस्त लोगों के पास जाएगी एवं समस्त जिला स्तर पर का भ्रमण करके बाल श्रम को रोकने के लिए बहुत सख्त कार्यवाही की जाएगी और जगह-जगह पर जागरूक अभियान टीम के द्वारा चलाए जाएंगे।

ग्राम सभा में समुदाय की भागीदारी का महत्व

गांधी जी ने सपना देखा था कि गांव के लोग अपने संसाधनों एवं ग्राम विकास की रूप रेखा स्वयं तय करें और जिसको मजबूत करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कड़ी ग्राम सभा है। जो जमीनी स्तर पर सामुदायिक भावना को जागृत करती है। सभी लोगों के साथ बैठकर काम करने का अवसर व सामाजिक दूरी को कम करके सामाजिक सौहार्द का वातावरण बनाती है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि ग्राम सभा का मतलब है गांवों में रहने वाला प्रत्येक पुरुष और महिला जिसने 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली हो, उसका नाम मतदाता सूची में दर्ज हो, वे सभी ग्राम सभा के सदस्य होते है। जहाँ ग्रामीण समुदाय के सभी वयस्क, युवा, बुजुर्ग, महिला - पुरुष, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग अपने मामलों के विषय में सामूहिक निर्णय लेते हैं। इससे आमजन को सक्रिय, प्रत्यक्ष व पूर्ण भागीदारी प्राप्त होती है। **दक्षिण राजस्थान में कार्यरत वाग्धारा संस्था के प्रयास:** संस्था द्वारा 1000 गांवों में सक्षम समुह, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, जनजातीय स्वराज संगठन, जनजातीय विकासमंच के माध्यम से समुदाय में ग्राम सभा की बैठकों में ज्यादा से ज्यादा ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु समय समय पर प्रशिक्षण, बैठके, रैलीया एवं वाते पत्रिका के माध्यम से हर माह जानकारी साझा की जाती है और समुदाय की भागीदारी के महत्व के बारे में अवगत करवाते हुए लोकतंत्र को ग्राम चौपाल तक पहुंचाने का कार्य पंचायतों ने किया तो ग्राम सभा को लोकतंत्र की चौखट तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य संस्था द्वारा किया जा रहा है। पंचायती राज को जीवंत, उर्जवान और गतिशील बनाने तथा शिखर से धरातल तक (स्वराज) के प्रवाह को पहुंचाने के लिए जनजातीय विकास मंच के द्वारा हर माह जनजातीय स्वराज संगठनों द्वारा मासिक बैठके व ग्राम स्तर पर संगठनों एवं स्वराज संगठनों के माध्यम से समय समय पर ग्राम चौपाल कर ग्राम सभाओं में आम लोगों की पहुंच बनाई जा रही है।



ग्राम सभा आयोजन प्रक्रिया:

किसी भी ग्राम पंचायत की निर्वाचन सूची में जो नाम दर्ज होते है उन व्यक्तियों को सामूहिक रूप से ग्राम सभा कहा जाता है। ग्राम सभा में 200 या उससे अधिक की जनसंख्या का होना आवश्यक है।

ग्राम सभा बैठक की सूचना 15 दिन पूर्व नोटिस एवं गांव के चौराहे पर चरपा कर देनी होती है। प्रत्येक ग्रामसभा का अध्यक्ष सरपंच होता है । ग्रामसभा का क्षेत्र एक सम्पूर्ण ग्राम पंचायत होती है।

: ग्राम सभा बैठक की अवधि:

26 जनवरी- (गणतंत्र दिवस,)

1 मई - (मजदुर दिवस,)

15 अगस्त - (स्वतंत्रता दिवस,)

2 अक्टूबर - (गांधी जयन्ती,)

ग्राम सभा में समुदाय की भागीदारी :-

व्यक्तियों और समुदाय के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले निर्णय सर्व सहमति से लिये जाने है।

सामुदायिक विकास के लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि वे अपनी परिस्थितियों से परिचित है और स्थानीय जरूरतों को भली भाँति समझते हैं । यह उनके स्वयं के हित में है और एक साथ मिलकर अपनी समस्याओं का हल निकालना।

गाँव से संबंधित विकास योजनाओं के किर्यान्वयन में सहायता प्रदान करना। विकास योजनाओं का क्रियान्वयन करने के लिए लाभविन्त होने वाले पात्र व्यक्तियों की पहचान करवाना।

ग्राम पंचायत क्षेत्र में सामुदायिक कल्याण कार्यक्रम के लिए अंशदान और स्वेच्छिक श्रमदान करने में सहयोग देना।

गाँव के भीतर शिक्षा और परिवार कल्याण कार्यक्रमों में सभी तरह के सहयोग करना।

गाँव में समाज के सभी वर्गों के बीच एकता और सौहार्द बढ़ाना।

ग्राम पंचायत के मुखिया और सदस्यों से योजना, आय, और व्यय के संबंध में जानकारी लेना।

ग्राम पंचायत के कार्य, चाहे व्यक्तिगत हो या सामुदायिक योजनाएँ समुदाय द्वारा ग्राम पंचायत में संभावित मनमानी पर रोक लगाना।

ग्राम सभा की बैठक में समस्त विषय (मुद्दे) उपस्थित सदस्यों के बहुमत से तय किए जाएंगे और उस पर हाथ

उठाकर सबकी सहमति ली जायेगी।

समुदाय की भागीदारी से सामुदायिक विकास में पारदर्शिता बनी रहती है। भाई-भतीजा वाद के अवसर कम हो जाते है। समुदाय के सभी सदस्यों के लिए व्यावसायिक अवसर बढ़ जाते है।

स्थानीय विकास के लिए एक व्यापक एवं समुदाय मांग की योजना तैयार करना।

योजना विकास के लिए महिला समुह, संगठन एवं पंचायती राज संस्थानों के बीच आपसी बातचीत को सरल बनाना।

समुदाय अपनी क्या क्या मांग कर सकता है :-

सामाजिक सहभागिता: निर्बल परिवारों के सामाजिक उत्थान के लिए योजना बनाना ।

हकदारी: मनरेगा, स्वच्छता, शोचालय निर्माण, आवास, उच्चवला, राशनकार्ड, जाँब कार्ड आदि जैसी विभिन्न योजनाओं के लिए मांग।

आजीविका: कृषि, पशुपालन के विकास, उत्पादन एवं सेवाओं के लिए कुशलता प्रशिक्षण के जरिये आजीविका बढोतरी के लिए विशिष्ट मांग।

सार्वजनिक वस्तुएं एवं सेवाएं- राशन वितरण व अन्य बेहतर सेवा सुविधा के लिए आवश्यक मूलभूत मांग करना ।

संसाधन विकास: जल, जंगल,जमीन एवं स्थानीय रूप से उपलब्ध अन्य संसाधनों जैसे प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा एवं विकास के लिए मांग।

समस्त ग्राम वासियों के दुधारू व पालतु पशुओं के लिए टीकाकरण की मांग करना।

सामुदायिक व सरकारी जर्जर भवनों के संबंध में निर्णय करवाने की मांग करना।

शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल व पोषण केन्द्रों के साथ अन्य सुविधाओं की मांग करना।

वाग्धारा द्वारा गठित स्वराज संगठन सदस्यों द्वारा ग्राम सभा आहुत करवाने के संबंध में मांग पत्र देते हुये।



लसोड़ा (गुन्दी) एक स्वास्थ्य वर्धक औषधि

जय गुरु साथियों, आपकी अपनी टीना रायपुरिया जोकि आपसे बहुत सारे सवाल पृछना चाहती है जैसा की आप मुझे जानते है, की मैं बहुत सवाल पृछती हूँ जैसे की पिछले बार पूछे थे, तो आप समझ गए हैं की मैं फिर से कुछ सवालों के साथ आपसे गुफ्तगु करना चाहती हूँ मुझे उम्मीद है आप मेरे सवालों के उत्तर जरूर देगे ! **‘क्या आप जानते है एक इस फल के बारे में जो हमारे आस पास है लेकिन हम उसके गुणों के बारे नहीं जानते’**
चलिए तो हम शुरु करते है
1.फलो का राजा..... कहते है?
2.वर्षा ऋतु में कौन-कौन से फल मिलते है?.....
3.हमारे पूर्वज हलमा क्यों करते थे ? क्या आप भी करते है?
4. हमारे जीवन में बड़ो की बातो और बरगद के पेड़ की सही उम्र क्या होती है?
5. सीताफलो को सीताफल नाम किसने दिया है ?
चलिए तो आज हम जानेगे लसोड़ा के बारे
सैकड़ों बीमारियों को दूर करने वाली जड़ी बूटी है लसोड़ा, सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है इसके फल-पत्ते और बीज आपने अपने घर के आस-पास या किसी गार्डन में लसोड़ा के पेड़ देखे होंगे लेकिन शायद आप इसकी खूबियों के बारे

में नहीं जानते होंगे। इस पेड़ के फल, पत्ते, छाल और बीज हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। सैकड़ों बीमारियों को दूर करने वाली जड़ी बूटी है लसोड़ा, सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है इसके फल-पत्ते और बीज आपने अपने घर के आस-पास या किसी गार्डन में लसोड़ा के पेड़ देखे होंगे लेकिन शायद आप इसकी खूबियों के बारे



जयगुरुसब से
जनजातीय स्वराज संगठन हिरन के सभी कर्मठ स्वराज कार्यकर्ताओ व पाठको को जय गुरु, जैसा की हम सभी को विदित है की पिछला कुछ समय हमारे समुदाय केलिए काफी कठिन व चुनौतियो भरा रहा है जिसका सामना हमारे संगठन के साथियों ने संयम व तत्परता से किया है जिसका सीधा फायदा है कि वर्तमान में हमारे जिले में कोरोना का प्रभाव काफी कम है किन्तु फिर से यहाँ मुसीबत का सामना करने के लिए हमे तैयार रहना है यह समय हमारे इमलिए भी अत्यन्त महत्व का है की कोरोना की तीसरी लहर ने दस्तक देदी है जो पहले की तुलना मे अधिक घातक है, बचो परज्यादा प्रभाव डालने वाली है इस कारण हमारा आप सभी से विशेष निवेदन है की आप सभी अपने परिवार व अपने समुदाय हेतु मर्गदर्शक बन कर कार्य करें जिससे समुदाय को होने वाली जन - धन की हानि से बचा जा सके । साथ ही इस समय जो बारिश के बाद पनपने वाले मच्छर और जीवा-जन्तु जिससे की बच्चो से ले कर बड़े तक बीमार हो रहे है हमे इस बुखार खांसी और जुखाम को हलके में नही लेना है तुरंत बच्चे हो या बड़े सभी को समय रहते डॉक्टर को दिखाना है ।
‘समस्त जन से निवेदन है अपना ध्यान खुद रखे और सतर्कता बरते’
सच्चास्वराज :- सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवों मेंजिला

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

हिरन

प्रशासन के साथ मिलकर जिन बच्चो को चिन्हित किया गया उसमे से सज्जनगढ़ और कुशलगढ़ ब्लॉक के अतिकुपोषित 118 बच्चों को MTC रेफर किया गया एवं पोषण स्वराज अभियान में आशा एवं आंगनवाडी कार्यकर्ता ने सपोर्ट किया । चाइल्ड हेल्थ लाइन के माध्यम से रेफर बच्चो का समय समय पर फॉलोअप लिया गया इस कार्य में स्वराज मित्रों ने सहयोग किया जो की सराहनीय है । जिसमे मुख्य भूमिका सहजकर्ता, स्वराज मित्र एवं सक्षम समूह, ग्राम विकास बाल अधिकार समिति एवं जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों की रही ।
सच्चा बचपन :- सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवों में से 276 में ICDS एवं जिला प्रशासन के साथ 15 दिवसीय पोषण स्वराज अभियान किया गया जिसमे 0 – 5 सालतक के 26,698 बच्चो का सर्वे किया जिसके परिणाम स्वरूप कुपोषित बच्चे – 5,249 और अतिकुपोषित बच्चे – 2,859 निकल कर आये जो कि बहुत ही बड़ा आंकड़ा है वाग्धारा संस्था ने पोषण स्वराज अभियान में 15 दिन का पोषाहार दिया गया जिसमे रागी के लड्डू, मुंगफली की चिककी, कांगीन के लड्डू, तिल मुंगफली के लड्डू, पकाने के लिए सुखा राशन, सामा (भंगर), दलीया, शक्कर, मूंगदाल, साबुत मुग एवं मुंगफली के दाने पोषण आहार के रूप में कुशलगढ़ एवं सज्जनगढ़ ब्लॉक में आंगनवाडी पर पोषाहार उपलब्ध करवाया गया । पोषण स्वराज अभियान का मुख्य उद्देश्य स्वराज से जोड़ने के साथ हमारे आस-पास जो भी उपयोग हेतु खाद्य एवं पोषण है उसका महत्त्व समाज जन के बीच पुनः जीवित करना और इसे बच्चे जो कुपोषित और अतिकुपोषित है उन्हें कोरोना की तीसरी लहर से सुरक्षित करना का

माही

!! मेरे समुदाय परिवारो को राम-राम !!
समुदाय के समस्त साथियों को मेरा राम-राम, साथियों उम्मीद है आप जहाँ होंगे स्वस्थ होंगे एवं सुरक्षित होंगे । इस माह हमारे सचिव महोदय श्री जयेश जी जोशी द्वारा हमारे एवं विभिन्न जनजातीय स्वराज के साथ कोरोना की तीसरी लहर को लेकर बात की गई जिसमें निकल कर आया की तीसरी लहर बच्चो को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली है इस अंतर्गत हमने जिला प्रशासन के साथ मिलकर 750 गाँवों में पोषण स्वराज अभियान चलाया जिले में प्रशासन एवं महिला एवं बालविकास विभाग के साथ मिलकर 66000 बच्चो का स्क्रीनिंग की गई जिसके अंतर्गत हमारे खण्ड घाटोल में 23194 बच्चो का स्क्रीनिंग किया गया जिससे 3485 बच्चे अति कुपोषित एवं कुपोषित निकल कर आए।

साथियों हमको भी जब पता चला की हमारे घाटोल खण्ड में स्थिति काफी अच्छी नही है बच्चो की लेकर, तब हमने 258 गाँवों में पोषण स्वराज अभियान का आगाज किया जिसमे जो बच्चो कुपोषित व अतिकुपोषित निकल कर आए वो एवं उनकी माताओं की भागीदारी इस अभियान में 15 दिनों के लिए सुनिश्चित की गई। जिसमें हमारे ग्राम स्तर के ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति सक्षम समूह की बहने एवं जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्य अपना कार्य समझते हुए जुड़ गए जिसमे इन 15 दिवस में 85 – 90 % बच्चो में इस अभियान का लाभ लिया व सामान्य अवस्था में पुनः लोटे । साथियों इस प्रति के माध्यम से मैं आपका अभिवादन करना चाहता हुं क्योंकि हमारे ग्राम स्तर के स्वराज मित्र ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, सक्षम समूह एवं जनजातीय स्वराज संगठन के बिना यह सम्भव नही था । साथ ही इस बड़े आयोजन के लिए विशेष धन्यवाद माननीय श्री जयेश जी जोशी का जिन्होंने तीसरी लहर को भांपते हुए इतना बड़ा सकारात्मक कदम हमारे समुदाय के बच्चो के लिए उठाया ।

साथियों अब से हमारे ग्राम स्तर पर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति सक्षम समूह की बहने एवं जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्य बचे हुए कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चो का समय-समय पर मूल्यांकन करेगे एवम हमारे संगठन इन बच्चो को एक बार पुनः सामान्य अवस्था में लेकर आयेगे ।



एक किस्सा इस बार मुझे संगठन के माध्यम से ज्ञात हुआ तब मुझे बहुत खुशी हुई जब मैंने सुना की जनजातीय स्वराज संगठन अमर सिंह का गडा के दो गाँव मालनिया और तक्ताजी का गडा में जहा प्रशासन कोविड वेक्सीन को लेकर अपने सारे प्रयास कर चुका था परन्तु स्थानीय ग्रामीणों ने एक नही मानी फिर हमारे संगठन ने वहा के ग्राम स्तर के संगठन ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति एवं सक्षम समूह के साथ बैठक रखी । जिसमे सबसे पहले गाँव में इन संगठनों के सदस्यों में वैक्सिनेशन करवाया इसके बाद ग्रामीणों को बताया की यह लाभकारी है इसके बाद ग्रामीण माने की वेक्सीन से हमे कोई नुकसान नही है।

साथियों साथ ही अक्टूम्बर माह में पंचायती संघ में महात्मा गांधी नरोग के अंतर्गत आगामी वर्ष का ग्राम विकास की कार्य योजना बननी है जिसमे आप सभी साथी अपने गाँव के ग्राम विकास की कार्य योजना इसमें जुड़वा सकते है जिसमे 02 अक्टूम्बर (गांधी जयंती) पर आप साथी अपने राजीव गांधी कार्यालय पर जाए एवं अपने प्लान जुड़वाने में हमारे ग्राम स्तर के स्वराज मित्र स्थानीय सहजकर्ता का पूर्ण सहयोग लेवे । साथियों इस संस्करण के माध्यम से फिर मेरा एक निवेदन है की इस बार आप पुनः सिर्फ केटर शेड एवं वर्मी कम्पोस्ट हेतु आवेदन नही करें आप फॉर्म पार्डेड भूमि समतली करण कच्चा खेत पर चेकडेम के साथ ही मेडबंदी एवं केटर शेड एवं वर्मी कम्पोस्ट को अपने वार्षिक प्लान में जुड़ जाए ।

इन सबके साथ आपको पत्रिका के माध्यम से बताना चाहता हुं की हमारे गाँवो में सक्षम समूह के साथ जुड़ी महिलाओ के बच्चे ना तो कुपोषित निकले और ना ही अतिकुपोषित यह सकारात्मक लगा की इन परिवार के साथ हम विगत 04 वर्षों से सीधा संवाद कर रहे है और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इन परिवारो के बच्चो को कुपोषण से दूर रखा. साथियों इस बार भी हमने 4393 को कृषि के बीज, फलदार पौधे एवं सब्जी के बीज पहुंचाये जिससे हम इन परिवारों के साथ में ही गाँव के अन्य परिवारों को सभी गतिविधियों से जोड़ सके।

वेक्सीन जरूर लगवाए

जहाँ रहे सुरक्षित रहे ।

मानसून में स्किन पर फोड़े-फुंसी होना आम बात है। ये समस्या बच्चों में खासकर देखने को मिलती है जो खेलकूद में किसी कीड़े के संपर्क में आ जाते हैं। ऐसे में अगर आपके पास लसोड़े का पेड़ है तो उसके पत्ते को पीसकर प्रभावित त्वचा पर लगाएंगे तो आराम मिलेगा। जो लोग खुजली और एलर्जी की समस्या से परेशान हैं उनके लिए भी लसोड़ा सहायक है। इसके लिए आप लसोड़े के बीजों को पीसकर खुजली वाली जगह पर लगाएं जिससे आराम मिलेगा।
गले की खराश मिटा देता है लसोड़ा
अगर आपका गला खराब है तो आप ठीक करने के लिए लसोड़े की छाल को पानी में उबालें और फिर छानकर पिएं। स्वाद के लिए आप इसमें काली मिर्च और शहद भी मिला सकते हैं। इससे आपके गले की खराश दूर हो जाएगी। इसके अलावा इसके पेड़ की छाल का काढ़ा महिलाओं को पीरियड में होने वाले दर्द ये राहत दिलाता है।
ओरल हेल्थ में मददगार है लसोड़ा
बहुत से लोगों को कुछ चीजें खाने के बाद मसूड़ों में सूजन और दांत दर्द होने लगते हैं। ये समग्र ओरल हेल्थ में सहायक है। इसके सेवन से मुंह के छालों को भी दूर किया जा सकता है। ओरल हेल्थ में राहत पाने के लिए आप लसोड़े की छाल का पाउडर लें और उसे दो कप पानी में



उपचार डेमो करवाए गए हैं साथ ही हम वर्तमान परिपेक्ष में देख रहे हैं कि कृषि के दौरान रासायनिक खाद का उपयोग अधिक मात्रा में किया जा रहा है जिससे ना केवल जमीन बंजर हो रही है बल्कि पैदावार भी लगातार कम हो रही है इसी बात को ध्यान में रखकर वाग्धारा संस्था द्वारा सच्ची खेती अंतर्गत जैविक तरीकों से परम्परागत खेती को वापस बहाल करवाने हेतु प्रयास किये जा रहे है तथा जैविक कीटनाशक जैविक खाद इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है इस माह में PGS जैविक ग्रुप की कुल 47 मीटिंग हुई है जिसमें जैविक कृषि संबंधी क्रियाकलाप के बारे में किसानों को जागृत किया गया है तथा जैविक कृषि पद्धति अपनाकर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया है तथा जो किसान अधिक से अधिक जैविक कृषि में रुचि रखते हैं उन्हें सभी जैविक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। किसान उत्पादन बढ़ाने के प्रयास में इस माह संस्था द्वारा फसल विविधता कार्यक्रम अंतर्गत मिश्रित खेती के 6 फसल विविधता डेमो प्लॉट तैयार किए गए हैं जिसमें अलग-अलग फसलों को साथ में वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से उगाया जाएगा तथा उसके उत्पादन पर नजर रखी जाएगी । इसके परिणाम आने पर इसे बड़े लेवल पर अपनाया जा सकेगा । इस माह 356 सक्षम समूह की बैठक की गई ।

मानगढ़

!! हेता वागड़ वासीयो ने जय गुरु !!
समुदाय के मेरे सभी साथियों एवं वाग्धारा नी के सभी पाठकों को मेरी ओर से जय गुरु आशा है कि आप सभी स्वस्थ एवं कुशल रहेंगे । कोरोना की तीसरी लहर के बारे हमें वापस से सुनने को मिल रहा है और मौसम के परिवर्तन होने से गांव में वापस लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है तो मेरा आप सभी लोगों से आग्रह है कि अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें गर्म पानी का सेवन करें और सभी तरह की सावधानी बरतें जिससे हम कोरोना से लड़ सकें और कोरोना हमारे इस परिवेश में दोबारा ना आए । इस बार की लहर में बच्चों को खासकर से सावधानी बरतने की जरूरत है और जैसे कि शोधकर्ताओं ने बताया है कि बच्चे इस बार खासकर इस लहर से प्रभावित होंगे इसलिए हमें बच्चों की स्वास्थ्य के लिए सभी तरह के प्रयास करने हैं और इसी प्रयास के लिए वाग्धारा भी जुटी है और इस महीने की प्रमुख गतिविधियों में से एक गतिविधि हमारा पोषण स्वराज अभियान रहा है जिसमें हम बच्चों के स्वास्थ्य जिसमे कि खासकर कुपोषित एवम अति कुपोषित बच्चे जो कि इस कोरोना की बीमारी से प्रभावित हो सकते हैं उन बच्चों पर खास 15 दिवस का शिविर आयोजन कर हमने उन पर कार्य किया है । तो आइए हर माह की तरह इस माह भी हम जानते हैं की मानगढ़ इकाई में कौन-कौन सी प्रमुख गतिविधियां समुदाय के हित में की गई है । ICDS, चिकित्सा विभाग एवं स्वराज मित्रों का पोषण स्वराज अभियान के ऊपर प्रशिक्षण जिला प्रशासन एवं वाग्धारा के संयुक्त तत्वाधान में पोषण स्वााज अभियान करने का निर्णय लिया गया जिसमें कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चों को 15 दिवसीय शिविर आयोजन कर स्थानीय खाद्य व्यंजन के द्वारा उनके स्वास्थ्य में परिवर्तन लाया जा सके ताकि वह कोरोना की तीसरी लहर से बच सकें जिसके लिए बच्चों के साथ साथ उनकी मांओं का भी शिविर में क्षमता वर्धन किया जाए कि कैसे वह अपने स्थानीय खाद्य व्यंजनों के द्वारा अपने बच्चों के पोषण में सुधार सकते हैं । इस पूरे अभियान को करने के लिए एक टीम की आवश्यकता थी जिसमें आईसीडीएस विभाग चिकित्सा विभाग एवं वाग्धारा के समस्त टीम को चुना गया और उनके लिए एक दिवसीय का प्रशिक्षण आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से आईसीडीएस विभाग से महिला सुपरवाइजर एवं चिकित्सा विभाग से कुछ डॉक्टर को बुलाया गया और उनसे 15 दिवस की प्लानिंग के बारे में अवगत कारया गया और इसकी रूपरेखा में उनकी सहभागिता के बारे में उनको बताया गया गाँव में जो स्क्रीनिंग होनी है उसमें कार्यकर्ता एवं आशा की जिम्मेदारियों के बारे में उनको बताया गया इसके साथ ही वाग्धारा की समस्त टीम के सहजकर्ता एवं स्वराज मित्रों को स्क्रीनिंग के बारे में बताया गया जिसमें उनको बच्चों की लंबाई उनका वजन एवं भुजा का माप कैसे ली जाती है उसके बारे पूर्ण प्रशिक्षण दिया गया इसके साथ ही वाग्धारा के द्वारा जो खाद्य सामग्री जानी है उसकी भी प्लानिंग सुपरवाइजर द्वारा ली गई एवं विभाग तक इसे पहुंचाया गया साथी बच्चों की मांओं कि उपस्थिति कैसे बढ़ाई जाए इसके बारे में सभी को प्रशिक्षण दिया गया । प्रशिक्षण टीम में मानगढ़ इकाई के प्रबंधक रोहित



